प्रकाशन-परिचय

Catalogue

कलियुगाब्द

5116

2014-'15 ईसवी

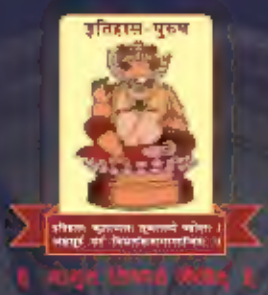

प्रकाशन-विभाग

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना

Publications Department

Akhila Bhāratiya Itihāsa Saṅkalana Yojanā

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना

राष्ट्रीय कार्यकारी समिति

मार्गदर्शक-मण्डल :

मा० हरिभाऊ चिन्तामणराव वझे (मुम्बई, महाराष्ट्र)
प्रो० शिवाजी सिंह (गोरखपुर, उत्तरप्रदेश)
प्रो० ठाकुर प्रसाद वर्मा (वाराणसी, उत्तरप्रदेश)
डॉ० चिन्तामणि नारायण परचुरे (पुणे, महाराष्ट्र)

●

अध्यक्ष :

प्रो० सतीश चन्द्र पित्तल (सहारनपुर, उत्तरप्रदेश)

●

उपाध्यक्ष :

प्रो० के०एन्० दीक्षित (नयी दिल्ली)
डॉ० देवी प्रसाद सिंह (वाराणसी, उत्तरप्रदेश)
डॉ० नारायण राव (खुर्दा, ओड़ीशा)
श्री एम०ए० नरसिंहन (मैसूर, कर्नाटक)

●

महासचिव :

डॉ० शरद हेबाळकर (अम्बाजोगाई, महाराष्ट्र)

●

सचिव :

प्रो० ईश्वरशरण विश्वकर्मा (गोरखपुर, उत्तरप्रदेश)
श्री रामप्रकाश शर्मा (शेर सिंह जी) (पञ्चकुला, हरियाणा)
प्रो० आनन्द मिश्र (ग्वालियर, मध्यप्रदेश)
श्री सुरेन्द्र हंस (नयी दिल्ली)

●

संगठन-सचिव :

मा० बालमुकुन्द पाण्डेय (नयी दिल्ली)

कोषाध्यक्ष :

श्री अमित खरखड़ी (नयी दिल्ली)

●

सह-कोषाध्यक्ष :

सी०ए० मुकेश शर्मा (नयी दिल्ली)

●

लेखक-प्रमुख :

श्री जानकी नारायण श्रीमाली (बीकानेर, राजस्थान)

●

विद्वत् परिषद् प्रमुख :

प्रो० एस०पी० बंसल (शिमला, हिमाचलप्रदेश)

●

महिला-प्रकोष्ठ संयोजिका :

श्रीमती अनुराधा राजहंस (हैदराबाद, आन्ध्रप्रदेश)

●

कार्यालय-सचिव :

डॉ० रत्नेश कुमार त्रिपाठी (नयी दिल्ली)

●

सदस्य :

डॉ० एस० कल्याणरमण (चेन्नई, तमिलनाडु)
डॉ० दामोदर झा (होशियारपुर, पंजाब)
श्री गिरीश भाई ठाकर (पालनपुर, गुजरात)
डॉ० महावीर प्रसाद जैन (उदयपुर, राजस्थान)
प्रो० रामदेव भारद्वाज (भोपाल)
प्रो० वाई० सुदर्शन राव (वारंगल, आंध्रप्रदेश)
प्रो० वैद्यनाथ लाभ (जम्मू)
श्रीमती अरुणा देशपाण्डे (कोल्हापुर, महाराष्ट्र)

॥ नामूलं लिख्यते किञ्चित् ॥

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना

प्रधान कार्यालय : बाबा साहेब आपटे स्मृति भवन, 'केशव-कुञ्ज', देशबन्धु गुप्त मार्ग,
झण्डेवालान, नयी दिल्ली-110 055

एक परिचय

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, इतिहास के क्षेत्र में कार्यरत विद्वज्जनों का एक राष्ट्रव्यापी संगठन है जो इतिहास, संस्कृति, परम्परा आदि के क्षेत्र में प्रामाणिक, तथ्यपरक तथा सर्वांगपूर्ण इतिहास-लेखन तथा प्रकाशन आदि की दिशा में कार्यरत है। देश एवं विदेशों में रह रहे इतिहास एवं पुरातत्त्व के विद्वान्, विश्वविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापक, अध्यापक, अनुसन्धान-केन्द्रों के संचालक, भूगोल, खगोल, भौतिकशास्त्रादि अनेक क्षेत्रों के विद्वान् तथा वैज्ञानिक एवं इतिहास में रुचि रखनेवाले विद्वान इस कार्य से जुड़े हुए हैं।

श्री बाबा साहेब आपटे

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रथम प्रचारक श्री उमाकान्त केशव (बाबा साहेब) आपटे (1903-1972) ने इतिहास में सम्यक् दृष्टि एवं सत्यापन के लिए बड़ा कार्य किया। उनके जीवनकाल में उनके विचारों को मूर्तरूप नहीं दिया जा सका। उनके देहान्त के बाद सन् 1973 में श्री मोरेश्वर नीळकण्ठ (मोरोपन्त) पिंगळे (1919-2003) जी की प्रेरणा से नागपुर में 'बाबा साहेब आपटे स्मारक समिति' की स्थापना हुई। प्रारम्भ में इस समिति ने दो कार्य अपने हाथ में लिए— 1. संसार की प्राचीनतम भाषा संस्कृत, जिसे संसार की समस्त भाषाओं की जननी भी कहा जाता है, का प्रचार-प्रसार एवं 2. भारतीय-इतिहास का पुनर्लेखन एवं इसके निमित्त सामग्री का संकलन।

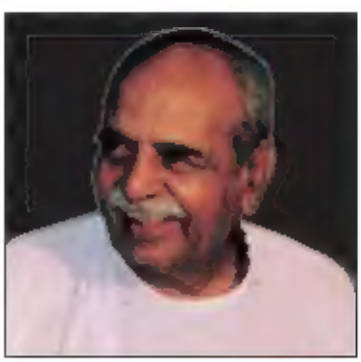

श्री मोरोपन्त पिंगळे

प्रारम्भ में चार वर्षों तक इतिहास-पुनर्लेखन के कार्य के संबंध में देश के इतिहासकारों से विचार-विमर्श चलता रहा। अंततोगत्वा समिति के संस्थापक श्री पिंगळे जी के सतत प्रयत्नों और मार्गदर्शन में नागपुर में सन् 1978 एवं 1979 में देश के विभिन्न प्रान्तों के इतिहास के विद्वानों की दो बैठकों मे उपर्युक्त विषय के समस्त पक्षों पर विस्तृत चर्चाओं के पश्चात् सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि इतिहास के पुनर्लेखन एवं सामग्री-संकलन का कार्य 'अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना' के नाम से किया जाये। तत्पश्चात् 1980 से यह कार्य विधिवत् प्रारम्भ हुआ। योजना का पंजीकरण 'अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना' के नाम से वैशाख शुक्ल पूर्णिमा, कलियुगाब्द 5096, तदनुसार दिनांक 24 मई, 1994

ई० को दिल्ली में हुआ। सन् 1995 में संस्कृत के प्रचार-प्रसार के कार्य को योजना से अलग करके 'संस्कृत भारती' को सौंप दिया गया। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना का पंजीकरण दिल्ली में होने के कारण एवं दिल्ली के सर्वांगीण महत्त्व के कारण इसका मुख्यालय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यालय 'केशव कुञ्ज', झण्डेवालान में स्थापित किया गया। योजना का कार्य बढ़ने के साथ ही और अधिक स्थान की आवश्यकता हुई। अतएव केशव कुञ्ज-परिसर में ही 'बाबा साहेब आपटे स्मृति-भवन' का निर्माण कराया गया, जिसका लोकार्पण संघ के तत्कालीन सरसंघचालक परम पूज्य प्रो० राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) के कर-कमलों से चैत्र शुक्ल पञ्चमी, शनिवार, कलियुगाब्द 5099, तदनुसार दिनांक 12 अप्रैल, 1997 को संपन्न हुआ। उसी दिन से योजना का राष्ट्रीय मुख्यालय बाबा साहेब आपटे स्मृति-भवन में स्थानांतरित हो गया और उसी दिन से योजना अपने अखिल भारतीय कार्य का संचालन इसी भवन से करने लगी।

योजना का उद्देश्य

अनेक क्षेत्र में अनुभव किया जाता रहा है कि भारतीय इतिहास-लेखन का जो कार्य अंग्रेज़ों के नेतृत्व में प्रारम्भ हुआ और वैज्ञानिक, वस्तुपरक शोध के नाम पर जिसे भारतीय-इतिहासकारों ने भी अपनाया, वह अनेक स्थलों पर पूर्वाग्रह से प्रेरित, तथ्यों के अज्ञान अथवा जान-बूझकर की गई उपेक्षा पर आधारित है जिसके कारण भारतीय-इतिहास में अनेक विसंगतियाँ एवं भ्रम उत्पन्न हो गए हैं। आर्य-द्रविड़ समस्या इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है जिसे सुनियोजित तरीके से स्थापित किया गया था तथा इस पर इतनी चर्चा चलाई गई कि भारतीय-वाङ्मय के उद्भट विद्वान् भी इसे सत्य मानकर चलने लगे। इतिहास-लेखन में भारतीय-स्रोतों की अवहेलनाकर उसे तिरस्कृत किया गया। विदेशी-आक्रमण के युगों को उभारा गया। अन्धकार-युग की कल्पना, मुस्लिम-इतिहाकारों के दुराग्रह एवं दम्भपूर्ण उल्लेखों को ऐतिहासिक तथ्य की मान्यता, भारतीय-परम्पराओं एवं साहित्यिक स्रोतों की उपेक्षा आदि से भारत का इतिहास विकृत हुआ है। इतिहासकार के मन में किसी सर्वमान्य राष्ट्रीय आदर्श के अभाव तथा विभिन्न राजनीतिक वादों के प्रभाव ने राष्ट्रीय स्तर पर उसे वैचारिक अस्पष्टता से ग्रस्त कर दिया है।

उपर्युक्त विचारों की पृष्ठभूमि में अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना का उद्देश्य है भारतीय-कालगणना के आधार पर सृष्टि-रचना के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान समय तक के इतिहास का पुनर्संकलन। यह पुनर्संकलन सत्य, सही, निष्पक्ष तथ्यों पर आधारित, किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से रहित, आधुनिक वैज्ञानिक-अनुसंधानों और नवीनतम पुरातात्त्विक खोजों के आधार पर होगा। इस प्रकार हमारे देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा जीवन के अन्य सभी पक्षों को दर्शाते हुए हमारे देश का वास्तविक सूत्रबद्धात्मक तथा व्यापक इतिहास तैयार किया जायेगा। योजना का ध्येय-वाक्य है– **'नामूलं लिख्यते किञ्चित्'**।

योजना के उद्देश्य के प्रमुख बिन्दु निम्नवत् हैं–

1. भारतीय इतिहास में विद्यमान विकृतियों को दूर करना,
2. जिन विकृतियों के आधार पर भारतीय-इतिहास की रचना की गई है, उन विकृतियों का खण्डन करके इतिहास की पुनर्रचना,
3. इस प्रकार की पुनर्रचना के लिए प्राच्यविद्या की विभिन्न विधाओं से संबंधित प्रकाशित-अप्रकाशित प्रामाणिक सामग्री का ज़िला तथा ग्राम-स्तर पर संकलन
4. महाभारत-काल से लेकर वर्तमान तक और भारतीय-कालगणना के आधार पर ज़िला-सह भारतीय-दृष्टिकोण से और

भारतीय-कालगणना के आधार पर इतिहास-लेखन की व्यवस्था करना,

5. एतदर्थ योग्य व्यक्तियों, संस्थाओं तथा संगठनों आदि से सम्पर्क स्थापित करते हुए उन्हें संगठित एवं प्रेरित करना,
6. भारतीय-संस्कृति, प्राच्यविद्या एवं पूर्वजों की विशिष्ट उपलब्धियों के प्रति सामान्य व्यक्ति के हृदय में आदर-अनुराग, अभिरुचि एवं चेतना उत्पन्न करने के लिए कार्यक्रम आयोजित करना तथा
7. भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व से संबंधित अनुसंधानों को प्रोत्साहित करने के लिए संगोष्ठियों, परिचर्चाओं एवं विशेष व्याख्यानों आदि का आयोजन करना।

योजना के अखिल भारतीय प्रकल्प

अपने उद्देश्यों के अनुरूप योजना ने सृष्टि-संरचना से लेकर वर्तमान काल तक भारतीय-कालगणना, वैज्ञानिक-अनुसंधानों तथा नवीनतम पुरातात्त्विक अन्वेषणों, उत्खननों एवं समसामयिक वैज्ञानिक-व्याख्यात्मक प्रतिमानों के आधार पर भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनैतिक इत्यादि विविध पक्षों को उद्घाटित करनेवाले इतिहास की पुनर्रचना का कार्य अपने हाथों में लिया है।

इसके साथ ही योजना ने वर्षों से सतत अभियान चलाकर भारतीय-इतिहास में व्याप्त अनेक भयंकर विसंगतियों और त्रुटियों की ओर विश्व का ध्यान आकृष्ट करने के साथ-साथ इतिहास के उन पृष्ठों को भी उद्घाटित करने का प्रयास किया है जो अबतक अज्ञात रहे थे या जिनके सामने आने में अनेक अवरोध उत्पन्न किए जा रहे थे। योजना से जुड़े विद्वान् इतिहासकारों द्वारा उद्घाटित तथ्य, सत्य की कसौटी पर कसे होने के कारण मील के पत्थर सिद्ध हुए हैं और योजना के वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण इन्हें वैश्विक स्तर पर मान्यता मिली है। विगत दो दशक में भारतीय और विश्व-इतिहास से जुड़े अनेक भ्रामक तथ्यों से निराकरण में योजना को पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है और अनेक में योजना सफलता की ओर अग्रसर है। कुछ मौलिक अनुसंधान, जिसमें योजना ने सफलता प्राप्त की है और जो योजना के द्वारा वर्तमान में प्रकल्प के रूप में चल रहे हैं तथा जिनपर योजना ने पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं, इस प्रकार हैं—

1. आर्य-आक्रमण सिद्धान्त का निराकरण,
2. पुराणांतर्गत इतिहास,
3. हिंदू-कालगणना की वैज्ञानिक और वैश्विक मान्यता,
4. महाभारत-युद्ध की तिथि 3139-'38 ई०पू०,
5. वैदिक सरस्वती नदी शोध-अभियान,
6. सेण्ड्रोकोट्टस बनाम चन्द्रगुप्त मौर्य,
7. भगवान् बुद्ध की तिथि 1887-1807 ई०पू०,
8. जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य की तिथि 509-477 ई०पू०,
9. प्राचीन नगरों का युगयुगीन इतिहास,
10. तीर्थ-क्षेत्रों का इतिहास-लेखन,
11. 1857 के स्वातन्त्र्य महासमर पर प्रामाणिक इतिहास-लेखन,
12. जनजातीय इतिहास-लेखन,
13. भारतीय-संस्कृति का विश्व-सञ्चार इत्यादि

विश्व की कालयात्रा :
कालपुरुष-इतिहासपुरुष (सचित्र)

डॉ० वासुदेव पोद्दार

प्राचीन भारतीय ऋषियों का विज्ञानदर्शन 'विश्व की कालयात्रा' नामक ग्रन्थ में अपने साकार रूप में व्याख्यायित हुआ है। भारतीय ऋषियों का काल-संबंधी विराट् चिन्तन इस ग्रन्थ में आधुनिक विज्ञान के समक्ष तुलनात्मक धरातल पर अपने सैद्धान्तिक पार्थक्य और साम्य के साथ प्रस्तुत हुआ है। इस ग्रन्थ के अध्ययन से लगता है आज का विज्ञान बड़ी शीघ्रता के साथ ऋषिप्रज्ञा के निकट पहुँचता जा रहा है। विज्ञान की दृष्टि सर्वदा मुक्त-स्वतन्त्र एवं दुराग्रह से परे सत्यान्वेषिणी है, अतः सम्भावना यह भी है कि वह ऋषिप्रज्ञा से अनुप्राणित होता हुआ निकट भविष्य में भारत के कालजयी चिन्तन को शत-प्रतिशत आत्मसात कर ले। क्योंकि भारतीय ग्रन्थों में वर्णित आकाशगंगा, सूर्य, पृथिवी आदि का जो काल संख्यात्मक निर्देश के साथ प्रस्तुत हुआ है, वह आधुनिक विज्ञान द्वारा प्राप्त कालमान के बहुत सन्निकट ही नहीं, अपितु यथार्थ भी है। विभिन्न विषयों के तुलनात्मक सन्दर्भ के साथ सारे सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। इसके साथ ही विज्ञान के अनेक आनुषंगिक विषय, यथा– जैवद्रव्य का स्वरूप और विकास, ब्रह्माण्डीय द्रव्य के विकास का संरचनात्मक स्वरूप, बिग बैंग, स्टेडी स्टेट युनिवर्स, ओसिलेटिंग युनिवर्स, पल्सेटिंग युनिवर्स आदि अनेक सिद्धान्तों को इस ग्रन्थ में भली-भाँति स्पष्ट किया गया है।

पृष्ठ-आकार	:	8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, कलियुगाब्द 5102 (2000 ई०)
कुल पृष्ठ	:	385

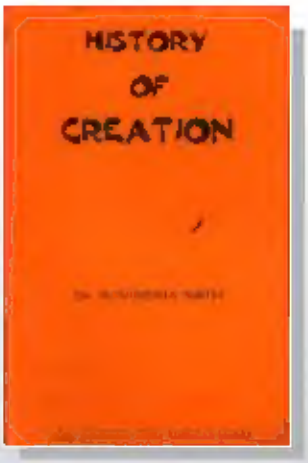

History of Creation

by Dr. Ravindra Nath

To establish the approximate time of the creation of Universe, the book go through Vedas, Upaniṣad, Purāṇas, Brāhmaṇas & lores. The study start for complete darkness to human society covering golden germ theory, concept of time, notion of *Māyā*, *Kalpa*, *Sriṣti* (creation) & *Laya* (dissolution). The historical footprints of divine and arranged process of creation of Universe, Nature, Living things, mankind are available in Purāṇas. With the evidences of Purāṇic literature the book clear the concept of creation.

Size	:	8.5" x 5.5"
Edition	:	First, Kaliyugābda 5102 (2000 C.E.)
No. of pages	:	viii + 94 pp.

सृष्टि का इतिहास

डॉ० दामोदर झा

इस पुस्तक में वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, शिलालेख तथा संस्कृत के ऐतिहासिक ग्रन्थों के आधार पर सृष्टि के इतिहास का विवेचन किया गया है। कालक्रम के लिए गणित ज्योतिष के वैज्ञानिक आधार लिया गया है। इस प्रकार सृष्टि के आरम्भ से अबतक अरबों वर्ष के इतिहास को कालगणना के साथ संक्षिप्त रूप में वर्णित किया गया है। हिंदू-धर्मग्रन्थों में प्रतिपादित सृष्टि के इतिहास को जानने के लिए यह पुस्तक नितान्त उपादेय है।

पृष्ठ-आकार	:	8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, कलियुगाब्द 5108 (विजयदशमी, 2006 ई०)
कुल पृष्ठ	:	151

आर्यवर्त का प्राचीन इतिहास

मूल लेखक : ठाकुर नगीनाराम परमार

हिंदी-अनुवाद : ठाकुर रामसिंह

संपादक : डॉ० रविप्रकाश आर्य

इस ग्रन्थ में सृष्टि के आरम्भ से कलियुग की 51वीं शती तक के भारत के विभिन्न साम्राज्यों और रियासतों का संक्षिप्त इतिहास तथा उनकी वंशावलियाँ हैं।

पृष्ठ-आकार	:	8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, कलियुगाब्द 5106 (2004 ई०)
कुल पृष्ठ	:	537

भारतीय कालगणना का वैज्ञानिक एवं वैश्विक स्वरूप (सचित्र)

डॉ० रविप्रकाश आर्य

प्राक्कथन : भा० भोरोपन्त पिंगळे

विश्व के विभिन्न प्राचीन संवतों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि भारतीय (हिंदू) कालगणना, जिसका वर्तमान समय (श्वेतवाराह कल्प) 1,97,29,49,116 वर्ष परिगणित किया गया है, सर्वाधिक प्राचीन है। प्राचीन ऋषियों ने काल की स्थूल गणना को तो सुरक्षित रखा ही, साथ ही इस गणना के आधारभूत सिद्धान्तों का प्रतिपादन भी साथ-साथ किया। इस पुस्तक में वेद, वेदांग, पुराणों एवं स्मृतियों में प्रतिपादित कालगणना के वैज्ञानिक एवं सार्वभौम स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। साथ ही भारतीय कालगणना के परिप्रेक्ष्य में भारतीय एवं विश्व-इतिहास का आकलन किया गया है।

पृष्ठ-आकार	:	8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, कलियुगाब्द 5099 (1997 ई०)
कुल पृष्ठ	:	viii + 105

भारतीय इतिहासशास्त्र एवं कालक्रम

डॉ० वासुदेव पोद्दार

यह पुस्तिका भारतीय इतिहासशास्त्र की विशेषता एवं भारतीय कालक्रम पर सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० वासुदेव पोद्दार का एक निबन्ध है। इसमें प्राचीन भारतीय इतिहास की विवेच्य सामग्री, भारत और पश्चिम की इतिहास-परम्परा, भारतीय इतिहासशास्त्र की विशेषता तथा भारतीय इतिहासशास्त्र और कालक्रम पर प्रकाश डाला गया है।

पृष्ठ-आकार	:	8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, कलियुगाब्द 5101 (2000 ई०)
कुल पृष्ठ	:	23

52वीं शताब्दी में प्रवेश

डॉ० रविप्रकाश आर्य

यह पुस्तक डॉ० रविप्रकाश आर्य की 'भारतीय कालगणना का वैज्ञानिक एवं वैश्विक स्वरूप' शीर्षक पुस्तक का संक्षिप्त संस्करण है। इसमें कालगणना पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है।

पृष्ठ-आकार	:	8.5" x 5.5"
कुल पृष्ठ	:	16

Stepping into 52nd Century

by Dr. Ravi Prakash Arya

This book is concise edition of the *'Bhāratīya Kālagaṇanā kā Vaijñanika evam Vaiśvika Svarūpa'* written by Dr. Ravi Prakash Arya. This focuses the concept of Chronology.

Size	:	8.5" x 5.5"
No. of pages	:	16 pp.

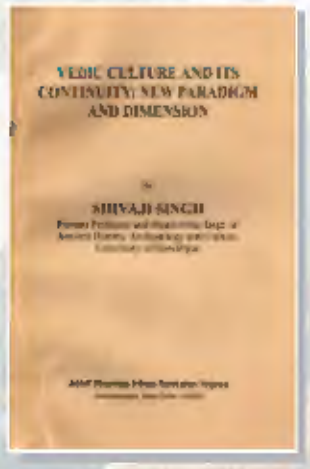

Vedic Culture and its Continuity : New Paradigm and Dimension (Lecture)

by Dr. Shivaji Singh

This book attack the vague concept of Aryan invasion, Aryan migration and establish Vedic & Harappan culture resemblance. The historical journey of civilization final root in Vedas. Concern ideas of Vedic age and their importance in the light of new archæological discoveries discussed by Dr. Shivaji Singh in this great address keynote.

Size : 8.5" x 5.5"
No. of pages : 96 pp.

Discovery of Sources of Vedic Saraswati in the Himalayas (Illustrated)

by V.M.K. Puri

This book portray geographical & geological picture of Vedic river Sarasvatī . There is a discussion about source, drainage system and migration of river in Himalaya region. A comparative study of ancient Sarasvatī in present context and its connecting rivers denotes through maps.

Size : 8.5" x 5.5"
Edition : First, Kaliyugābda 5102 (2000 C.E.)
No. of pages : 52 pp.

वैदिक सरस्वती नदी शोध अभियान

(सचित्र)

सपादक : पद्मश्री डॉ० विष्णु श्रीधर वाकणकर

वेदों, भारतीय धर्मशास्त्रों और पुराणों में वर्णित विशाल एवं पवित्र सरस्वती नदी को ससार के सभी प्रतिष्ठित विद्वान् स्वीकार करते हैं इसी पवित्र सरस्वती नदी के तट पर मत्रद्रष्टा ऋषियों ने वेदमत्रों का साक्षात्कार किया था। महाभारत काल (3139 ई०पू०) में यह नदी सूखने लगी थी और कालान्तर में यह नदी अत सलिला हो गयी। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना ने मा० मोरोपन्त पिंगळे (1919-2003) एव पद्मश्री डॉ० विष्णु श्रीधर वाकणकर (1919-1988) के नेतृत्व में दिनांक 17 नवम्बर, 1985 से 19 दिसम्बर, 1985 के मध्य इस अत सलिला सरस्वती नदी का व्यापक सर्वेक्षण किया। यह सर्वेक्षण 'वैदिक सरस्वती नदी शोध अभियान' नामक पकल्प के अंतर्गत किया गया है। सर्वेक्षण में राष्ट्रीय-अतर्राष्ट्रीय ख्याति के 16 विद्वान् थे। सरस्वती के उद्गम स्थल आदिबद्री से सामनाथ तक लगभग 4 हज़ार किमी की दूरी का सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण के दौरान महत्त्वपूर्ण पुरातात्त्विक सामग्री एकत्र की गयी। सर्वेक्षण की वीडियो फिल्म भी तैयार की गयी इस पुस्तक में इसी सर्वेक्षण का यात्रा वृत्तात और सर्वेक्षण में सहभागी विद्वानों के सरस्वती नदी पर आधारित शोध-निबन्धों का संकलन है, जिनका संपादन डॉ० वाकणकर ने किया है।

पृष्ठ-आकार	:	8.5" x 5.5"
सस्करण	:	प्रथम, कलियुगाब्द 5112 (2010 ई०)
कुल पृष्ठ	:	iii + 109
आई०एस०बी०एन०	:	978-81-907895-2-3

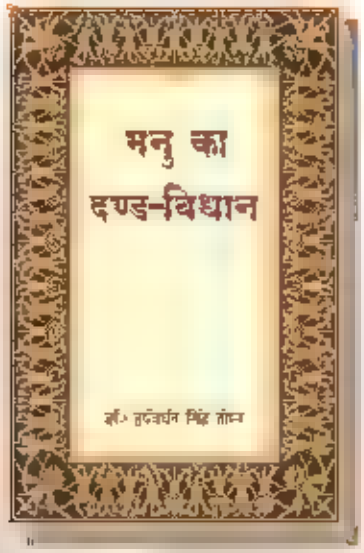

मनु का दण्ड-विधान

लेखक : डॉ० हर्षवर्धन सिंह तोमर

संपादक : अभिषेक कुमार मिश्र

भूमिका : मा० बालमुकुन्द पाण्डेय

इस पुस्तक में मनुस्मृति में वर्णित नियम विधानों का वस्तुपरक इतिहासम्मत विश्लेषण किया गया है। साथ ही वैचारिक वैविध्य के वर्तमान समय में उन वैदिक परम्पराओं व मान्यताओं का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है जिसकी समसामयिक परिवेश में महती आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त वर्तमान विधिक व्यवस्थाओं के दोषों के निराकरण और तदनुरूप मनुस्मृति में सर्वप्रथम वर्णित हुए अपराध व दण्ड-विधान का वर्तमान न्यायिक दण्ड-विधान के आधार-स्तम्भ के रूप में अध्ययन किया गया है। मनुस्मृति में वर्णित अपराध व दण्ड-विधान के विविध पक्षों, जैसे– नारीविरोधी वचन, शूद्रविरोधी वचन कठोर दण्ड-विधान की विज्ञानसम्मत तार्किक गवेषणा की गई है

इसके साथ ही इस ग्रन्थ में मनु और *मनुस्मृति* से संबंधित विवादों, प्रश्नों पर पक्षपातरहित नवीन दृष्टिकोण से सप्रमाण और युक्तियुक्त विवेचन किया गया है। इस प्रकार यह ग्रन्थ न केवल विधि के विद्यार्थियों और विद्वानों के लिए, अपितु राजनीति, समाजशास्त्र और इतिहास के विद्यार्थियों के लिए भी लाभकारी है, विशेषकर उनके लिए जिन्हें संस्कृत भाषा का पर्याप्त ज्ञान नहीं है

पृष्ठ आकार	8.5 x 5.5"
संस्करण	प्रथम, कलियुगाब्द 5116 (2014 ई०)
कुल पृष्ठ	xxxiii + 294
आई०एस०बी०एन०	978-81-907895-4-7

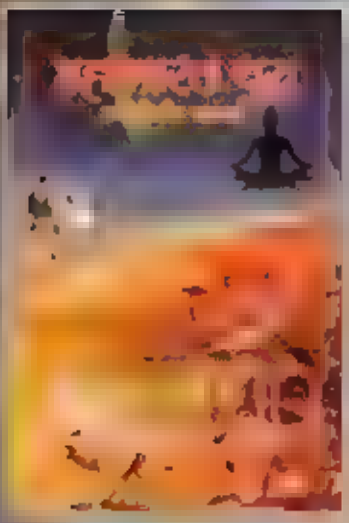

महाभारत युद्ध : कालनिर्णय समस्या

श्रीराम साठे

महाभारत युद्ध विश्व-महत्त्व की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। यह युद्ध कब घटित हुआ इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ लेने पर भारतीय इतिहास की काल-संबंधी बहुत-सी गुत्थियाँ सुलझ सकती हैं। वस्तुत: महाभारत-युद्ध की घटना भारतीय इतिहास का काल-निर्धारण करने का एक महत्त्वपूर्ण प्रस्थान-बिन्दु है जहाँ से मगध के राजवंशों की सुनिश्चित राजवंशावलियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

अंग्रेज़ों द्वारा भारत के इतिहास के पुनर्लेखन के लिए लन्दन में 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ ग्रेट ब्रिटेन' और कलकत्ता में 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल' की स्थापना की गई थी। इस सोसाइटी के इतिहासकार महाभारत-युद्ध की ऐतिहासिकता को अमान्य करके रोमन और यूनानी-अभिलेखों में भारतीय इतिहास का प्रस्थान-बिन्दु खोजने का प्रयत्न करने लगे। इस प्रयास के दौरान उन्हें सिकन्दर के भारत पर आक्रमण करने की तिथि 327 ई०पू० यूनानी-अभिलेखों से मिली। तब उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि केवल यही तिथि ठीक है और भारत का इतिहास इसी तिथि को मानकर लिखा जा सकता है। इस प्रकार उन्होंने एकपक्षीय घोषणा कर दी कि भारतीय-कालक्रम का आधार-बिन्दु यही तिथि है। तत्कालीन अंग्रेज़ शासकों ने इस तिथि को सरकारी तौर पर स्वीकार कर लिया। बाद में इसी तिथि को आधार मानकर मौर्य, गुप्तादि राजाओं व गौतम बुद्ध, आद्य शंकराचार्य इत्यादि का मनगढ़न्त काल-निर्धारण भी कर लिया गया जिससे भारतीय इतिहास में लगभग 1,300 वर्ष गायब हो गये।

योजना के शीर्ष इतिहासकार श्रीराम साठे ने सन् 1983 में सच फॉर द इयर ऑफ़ भारत वार' नामक एक ग्रन्थ की रचना की थी। प्रस्तुत पुस्तक उसी का हिंदी भाषांतर है। इसमें विद्वान् लेखक ने राष्ट्रीय स्तर पर विद्वानों की सहमति प्राप्त करके महाभारत युद्ध और भगवान् श्रीकृष्ण की ऐतिहासिकता सुनिश्चित करते हुए युद्ध की तिथि 3139-'38 ई०पू० निश्चित की है।

पृष्ठ आकार		8.5" x 5.5"
संस्करण	:	कलियुगाब्द 5512 (2010 ई०)
कुल पृष्ठ		v + 153
आइ०एस०बी०एन०	:	978-81-907895-1-6

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

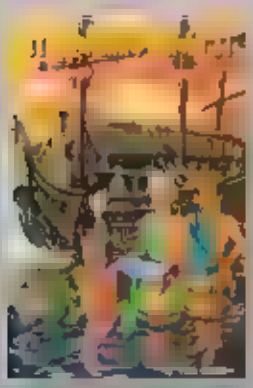

(भारतीय संस्कृति के विश्व सञ्चार की रोमाञ्चकारी गाथा) (सचित्र)

डॉ० शरद हेबाळकर

भूमिका : पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज
(आचार्य किशोरजी व्यास)

द्वितीय संस्करण

प्रथम संस्करण

इस ग्रन्थ में विश्व के विभिन्न देशों में व्याप्त हिंदू संस्कृति के सांस्कृतिक एवं राजनैतिक विस्तार के चिह्नों का ऐतिहासिक दृष्टि से विवेचन-विश्लेषण किया गया है। हमारे पूर्वजों ने **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** (ऋग्वेद 9.63.5), अर्थात् हम सारे विश्व को आर्य बनाएँगे' का उद्घोष करते हुए पूरे विश्व को भारतीय ज्ञान-विज्ञान एवं संस्कृति की ज्योति से आलोकित किया। इस विश्व-अभियान की रोमाञ्चकारी गाथा इस ग्रन्थ में वर्णित है।

इस ग्रन्थ से केवल अपनी सांस्कृतिक महत्ता ही अनुभव नहीं होती अपितु अन्य अनेक देशों के पूर्वेतिहास, उनका परिवर्तन आदि की भी जानकारी प्राप्त होती है। विभिन्न देशों का भारतीय संस्कृति से जो तादात्म्य है, उसका भी सुन्दर विवेचन इस ग्रन्थ में किया गया है। इन देशों की विशेषताएँ, स्थल-वर्णन, प्रचलित नामों का इतिहास, प्रसिद्ध व्यक्तित्व आदि लगभग प्रत्येक पहलू पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। ग्रन्थ अनेकानेक चित्रों से सुसज्जित है। कुल मिलाकर 'बृहत्तर भारत' (अखण्ड भारत) के सन्दर्भ में जानने के लिए यह एक आधिकारिक ग्रन्थ है।

पृष्ठ-आकार	:	8.5" x 5.5"
संस्करण	:	द्वितीय, कलियुगाब्द 5112 (2010 ई०)
कुल पृष्ठ	:	322
आइ०एस०बी०एन०	:	978-81-907895-3-0

Kṛṇvanto Viśvamaryam

The Inspiration story of dissemination of Bharatiya culture around the world

by Dr. Sharad Hebalkar
Translated by Prof. Mahavir Prasad Jain
Forwarded by Pujya Swami Govind Dev giri ji Maharaj (Acharya Kishorji Vyas)

The book throws light on brilliant saga of diffusion of Bhāratiya culture, language, religion, philosophy, system of medicine, art and architecture etc in distant parts of world. It gives a graphic description of ancestors of Bharatiya people venturing abroad across the high seas and through land routes with the motto of '**Kṛṇvanto Visvamāryam'** (*Rgveda* 9.63.5) i.e. raising the peoples of the world morally and reaching out to distant lands of the planet earth.

This treatise enlightens the readers about the life of peoples of various parts of the world before they came in contact with Bharatiya people and the change brought about by their coming in contact with Bharatiya culture and ethos. Pictures of various archaeological sites and *Prasastis* found in southeastern countries given in the treatise convinces the readers of the contention of author.

The Hindi work was well received by the readers. It has been published twice in Hindi. It was long felt that an English translation of the work should be brought out. This is the English rendering assiduously done by Shri Appa Sahib Vajran and Prof. Mahavir Prasad Jain. It contains a lot of additional material and for this reason it may well be regarded as good as an original work.

Size : 8.5" x 5.5 *In Press*

अविस्मरणीय विजयनगर साम्राज्य एवं महाराजा कृष्णदेवराय

डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल

दक्षिण भारत में माधवाचार्य विद्यारण्य (1296-1386 के आशीर्वाद से हरिहर प्रथम (1336-1356 एवं बुक्काराय प्रथम (1356-1377) द्वारा स्थापित विजयनगर साम्राज्य का उद्भव, उत्थान और पतन भारतीय इतिहास की एक रहस्यमयी पहेली है। भारतीय इतिहास के इस महान् केन्द्र का इतिहास क्रमबद्ध न होने के कारण अनेक विवादों से घिरा है उदाहरणतः सन् 1449-1509 के अगले साठ वर्षों तक देवराय द्वितीय (1424-1446, के पश्चात् और सन् 1516-1520 के बीच के काल के बारे में इतिहास में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है।

इस पुस्तक में विजयनगर साम्राज्य के इतिहास के बारे में अधिकाधिक सन्दर्भों के आधार पर प्रामाणिक जानकारी जुटाई गई है, साथ ही, विजयनगर के लगभग तीन दर्जन सम्राटों में सर्वाधिक प्रतापी और लोकप्रिय सम्राट् कृष्णदेवराय (1509-1530, के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

पृष्ठ आकार	:	8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, जून, 2009 ई०
कुल पृष्ठ	:	104

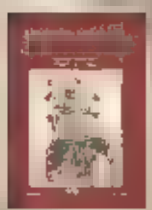

Italian traveler **Niccolò de' Conti** (1395–1469) wrote of him as the most powerful ruler of India.'

Columbia Chronologies of Asian History and Culture by John Stewart Bowman p 271 Published by Columbia University Press New York, 2013, ISBN 0-231-11004-9.

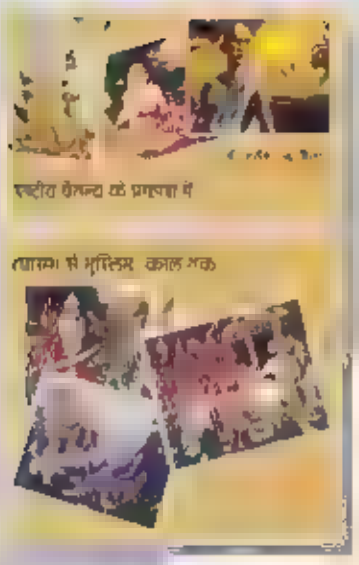

राष्ट्रीय चैतन्य के प्रकाश में भारत में राष्ट्रीयता का स्वरूप : प्रारम्भ से मुस्लिम-काल तक

डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल

इस ग्रन्थ में वेदकाल से लेकर मुगलों के शासन (1506-1707) में भारतीय राष्ट्रीयता अथवा राष्ट्रवाद की संकल्पना, राष्ट्रवाद की भारतीय अवधारणा वैशिष्ट्य के साथ इसके क्रमिक विकास का संक्षेप में विश्लेषण किया गया है। मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम तथा सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के विभिन्न तत्त्वों के संक्षिप्त वर्णन के साथ इसके सन्दर्भ में पाश्चात्य भ्रान्तियों को भी स्पष्ट किया गया है इसके साथ ही समय-समय पर वैदेशिक आक्रमणों के साथ इसकी अस्मिता की रक्षा के लिए किए गए प्रयासों की चर्चा की गई है।

पृष्ठ-आकार	:	8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, कलियुाब्द 5115 (2013 ई०)
कुल पृष्ठ	:	xii + 184
आई०एस०बी०एन०	:	978-93-82424-05-5

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे ।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु ॥

–अथर्ववेद, १९.४१.१

अर्थात्, प्रकाशमय ज्ञानवाले ऋषियों ने सृष्टि के आरम्भ में लोककल्याण की इच्छा रखते हुए दीक्षापूर्वक तप किया। उससे राष्ट्र, बल और ओज की उत्पत्ति हुई। इस (राष्ट्र) के लिए देवगण उस (तप और दीक्षा) को अवतीर्णकर (राष्ट्रिकों में) संस्थित करें अथवा, प्रबुद्धजन इस राष्ट्र-देवता की उपासना करें।

राष्ट्रीय चैतन्य के प्रकाश में भारत का स्वाधीनता संघर्ष

डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल

इस ग्रन्थ में भारतीय स्वाधीनता के महान् संघर्ष में, राष्ट्रीय चैतन्य के प्रकाश में सुदृढ़ तथा स्वस्थ परम्परा पर आधारित सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, भारतीय संस्कृति धर्म तथा देशभक्ति पर नियोजित क्रान्तिकारी राष्ट्रवाद तथा इण्डियन नेशनल काँग्रेस के भ्रामक राजनैतिक राष्ट्रवाद, मुसलमानों के मजहबी जुनून पर आधारित मुस्लिम राज की स्थापना तथा भारतीय कम्युनिष्टों के आर्थिक नकारात्मक राष्ट्रवाद का विश्लेषणात्मक विवेचन किया गया है।

पृष्ठ-आकार	:	8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, कलियाब्द 5114 (2012 ई०)
कुल पृष्ठ	:	397
आई०एस०बी०एन०	:	978-93-82424-00-0

"This Hindu nation was born with the Sanatan Dharma, with it it moves and with it it grows. When the Sanatan Dharma declines, then the nation declines, and if the Sanatan Dharma were capable of perishing, with the Sanatan Dharma it would perish. The Sanatan Dharma, that is nationalism."

—Sri Aurobindo (1872-1950)

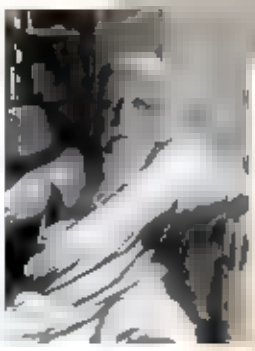

Delivered at Uttarpara, Bengal, on 30 May 1909. Text published in the *Bengalee* an English language newspaper of Calcutta, on 1st June, thoroughly revised by Sri Aurobindo and republished in the *Karmayogin* on 19 and 26 June

www.itihasankalan.org

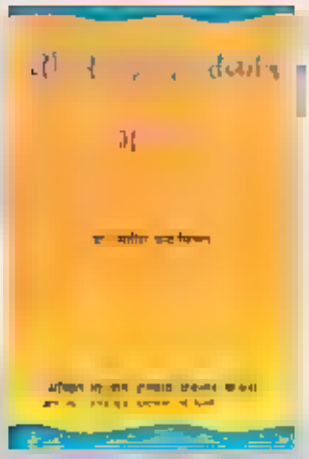

ब्रिटिश इतिहासकार तथा भारत

डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल

इस पुस्तक में ईस्ट इण्डिया कम्पनी कालीन कुछ प्रतिनिधि ब्रिटिश इतिहासकारों, यथा– सर विलियम जोन्स, चार्ल्स विल्किन्स हेनरी थॉमस कॉलब्रुक, सर जॉन शोर, होरेस हेमन विल्सन, जेम्स मिल, थॉमस बैबिंगटन मैकॉले, चार्ल्स ग्राण्ट, विलियम विल्बरफोर्स, एलीफिन्स्टन, सर जॉन मेलकम कालोनल जेम्स टॉड, ग्राण्ट डफ, कनिंघम सर जे० डब्ल्यू० कयी, जॉर्ज ब्रुश, मैलीशन इत्यादि के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी कृतियों का विवेचन और विश्लेषण किया गया है

पृष्ठ आकार		8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, 2010
कुल पृष्ठ	:	260
आई०एस०बी०एन०	:	978-81-907895-4-7

काँग्रेस : अंग्रेज़ भक्ति से राजसत्ता तक

डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल

इस पुस्तक मे एक ब्रिटिश अधिकारी एलेन ऑक्टेवियन ह्यूम (1824-1912) द्वारा स्थापित इण्डियन नेशनल काँग्रेस की अंग्रेज परस्ती और उसके फलस्वरूप राजसत्ताप्राप्ति की पैनी समालोचना की गई है। साथ ही, काँग्रेस के बदलते संविधान, बदलते उद्देश्यों तथा राष्ट्रवाद या भारत राष्ट्र के बारे में उसकी भ्रामक सोच का विश्लेषण किया गया है।

पृष्ठ-आकार	:	8.5" x 5.5"
सस्करण	:	2011
कुल पृष्ठ	:	vii + 167
आई०एस०बी०एन०	:	978-81-907895-6-1

स्वामी विवेकानन्द की इतिहास दृष्टि

लेखक : डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल

भूमिका : मा० बालमुकुन्द पाण्डेय

यह पुस्तक भारतीय एवं विश्व इतिहास के सन्दर्भ में युगद्रष्टा स्वामी विवेकानन्द के मौलिक विचारों पर एक शोध-निबन्ध है। स्वामी विवेकानन्द यद्यपि कोई व्यावसायिक इतिहासकार न थे, तथापि उनका समकालीन परिस्थितियों का तथा गौरवमय इतिहास का विश्लेषण जहाँ एक ओर ब्रिटिश इतिहासकारों के मनगढ़न्त तथा भ्रामक प्रश्नों तथा प्रचार का तर्कसंगत व प्रामाणिक उत्तर प्रस्तुत करता है, वहीं भारतीय इतिहासकारों को दिशाबोध भी कराता है।

पृष्ठ आकार		8.5" x 5.5"
संस्करण	:	द्वितीय, 2012
कुल पृष्ठ	:	200, 8"x7"
आई०एस०बी०एन०	:	978-93-82424-02-4

विवेकानन्द, सुकर्ण और इण्डोनेशियाई राष्ट्र निर्माण

लेखक : डॉ० रामदेव भारद्वाज

भूमिका : डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल

इस पुस्तक में इण्डोनेशियाई राष्ट्र निर्माण में उसके प्रथम राष्ट्रपति सुकर्ण (1915-1967) की भूमिका एवं उनपर भारतीय चिन्तकों, विशेषकर स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व और चिन्तन के प्रभावों की समीक्षा की गई है। साथ ही इण्डोनेशियाई राष्ट्र का दार्शनिक आधार– पञ्चसिला-राष्ट्रवाद, मानवतावाद, प्रजातन्त्र, सामाजिक न्याय और ईश्वर में विश्वास पर स्वामी विवेकानन्द के प्रभावों का मूल्यांकन किया गया है।

पृष्ठ-आकार	:	8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, कलियुगाब्द 5115, 2013 ई०
कुल पृष्ठ	:	xii + 34
आई०एस०बी०एन०	:	978-93-82424-07-9

हिंदुत्व से प्रेरित विदेशी महिलाएँ (सचित्र)

डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल

इस पुस्तक में हिंदू संस्कृति से अनुप्राणित विश्वविख्यात विदेशी विदुषीत्रय मार्गरेट एलिजाबेथ नोबुल (सुश्री भगिनी निवेदिता 1867-1911), डॉ० एनी बेसन्ट (1847 1933) एव श्रीमती मिर्रा अल्फासा रिचर्ड (श्रीमाँ 1878 1973) की जीवनी, उनके कुछ प्रमुख जीवन-प्रसंगों, कृतियों एवं विचारें पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

पृष्ठ-आकार		8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, कलियुगाब्द 5115 (2014 ई०)
कुल पृष्ठ		viii + 111
आई०एस०बी०एन०	:	978-93-82424-10-9

The Problems in Indian Historiography

by K.M. Ramakrishna Rao

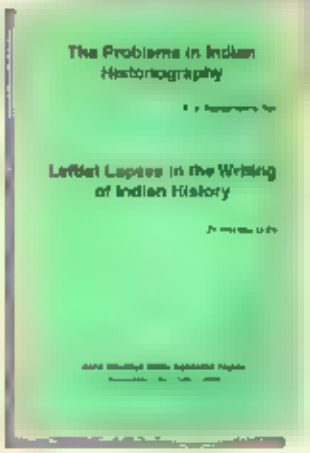

Leftist lapses in the writing of Indian History

by Dr. Nikhilesh Guha

A Discussion placed for controversial problems & their answers about ancient India through the eyes of Indian historian Try to underline the problems and lapses in the work of western & Indian historians. It gives a light on Indian Historiography

Size	:	8.5" x 5.5"
No of pages	:	44 pp.

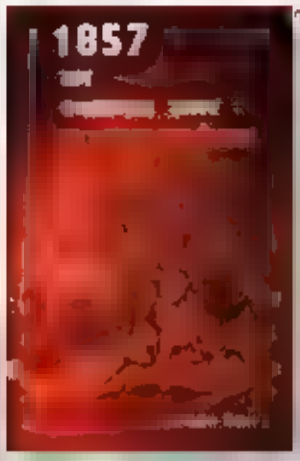

1857 का स्वातन्त्र्य समर : एक पुनरावलोकन

डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल

इस पुस्तक में सन् 1857 के भारतीय स्वातन्त्र्य समर के आधारभूत कारण, इकी व्यापकता इसके स्वरूप के साथ साथ इसके नेतृत्व तथा इसके दूरगामी प्रभावों का संक्षिप्त विश्लेषणात्मक विवेचन है साथ ही कतिपय पाश्चात्य और भारतीय इतिहासकारों द्वारा युद्ध के सन्दर्भ में फैलाई गई भ्रान्तियों का निराकरण तथा उन्हें सही परिवेश में रखने का प्रयास किया गया है .857 के महासमर के इतिहास को समझने में यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

पृष्ठ-आकार	:	8.5"x5.5"
द्वितीय संस्करण	:	2009
कुल पृष्ठ	:	92

1857 : The Vanavasi (Trabal) Leadership

by Dr. Satish Chandra Mittal

Translated by Prof. Mahavir Prasad Jain

Most historian show lack to .nvest.gate true nature of the war of 1857 The role of *Vanavāsi* region is not marked and .hey described as uncivilized wild people, their struggle depicted as riots There is an attempt to light a tribal leadership in the war of 1857 The study involve history of *Vanavāsis* their role is past invasion & struggle for country from the region of east of Gujarat, Kathiawar in the west to Himalaya in the north to the southern tribal belts.

Size	:	8.5"x5.5"
Edition		First, Kaliyugabda 5112 (2010 C.E.)
No. of pages	:	144 pp.
I.S.B.N.	:	978-81-907895-5-4

आर्य कौन थे ?

लेखक : श्रीराम श्रीपाद साठे

हिंदी अनुवाद : डॉ० किशोरीलाल व्यास

अपने साम्राज्यवादी इरादों को पूरा करने के लिए 19वीं शती के पाश्चात्य इतिहासकारों द्वारा भारतीय मानस पर जिन विकृत और अवैज्ञानिक सिद्धान्तों को सर्वप्रथम थोपा गया, उनमें 'आर्य-आक्रमण सिद्धान्त' प्रमुख है। इसके अनुसार 1500 ई०पू० में यायावर आर्यों (हिंदुओं) ने मध्यएशिया से आकर भारत पर आक्रमण किया और यहाँ के मूल निवासी द्रविड़ों को मारकर दक्षिण में खदेड़ दिया था। इस विचित्र और हास्यास्पद सिद्धान्त पर अंग्रेजों ने इतनी चर्चा चलाई कि स्वामी दयानन्द और लोकमान्य तिलक जैसे राष्ट्रवादी विद्वानों को भी हिंदुओं के मूलस्थान पर सन्देह हो गया। स्वाधीनताप्राप्ति के बाद भी देश के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा इस सिद्धान्त का खण्डन नहीं किया गया, प्रत्युत् इसे बढ़ावा ही दिया गया है।

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना द्वारा प्रारम्भ से ही इस विषय को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया गया और योजना से जुड़े पुरातत्त्व, नृतत्त्व, समाजशास्त्र, खगोल, भूगोल, संस्कृत साहित्य, भाषाविज्ञान आदि के विद्वानों ने इस सिद्धान्त को बेबुनियाद सिद्ध किया है। योजना के शीर्ष इतिहासकार श्रीराम श्रीपाद साठे ने ऐसे अनेक प्रमाणों को जुटाकर 'आर्यन्स हू वेअर दे ?' शीर्षक पुस्तक की रचना की। 'आर्य कौन थे ?' शीर्षक पुस्तक उसी का हिंदी-रूपांतरण है। इसमें वैज्ञानिक, साहित्यिक, भाषावैज्ञानिक आदि अनेक प्रमाणों के आधार पर आर्यों के विदेशी मूल के होने के भ्रान्त सिद्धान्त का खण्डन किया गया है।

पृष्ठ-आकार		8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, कलियुगाब्द 5112 (2010 ई०)
कुल पृष्ठ	:	iii + 115
आई०एस०बी०एन०	:	978-81-907895-0-9

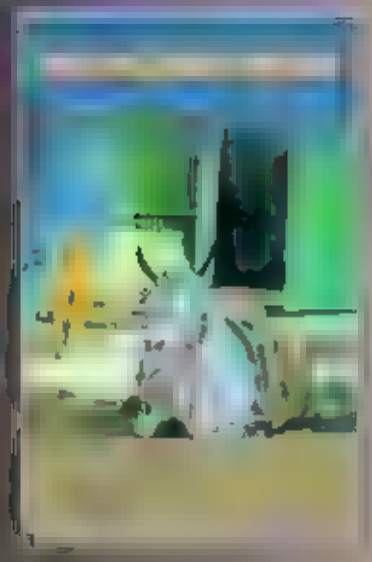

प्राचीन भारत में गोमांस : एक समीक्षा

सपादन एव भूमिका : डॉ० ठाकुर प्रसाद वर्मा

भारतीय सस्कृति और परम्परा किसी भी रूप में पशु-हत्या को मान्यता नहीं देती। किसी भी वैदिक ग्रन्थ, यथा– वेद, वेदांग और उपांग-ग्रन्थों में कहीं एक पंक्ति में भी गोहत्या का समर्थन नहीं किया गया है, अपितु पशु-हत्या का घोर प्रतिवाद ही किया गया है। किन्तु इसके बाद भी पारतन्त्र्य काल में ब्रिटिश इतिहासकारों की एक बड़ा समूह वैदिक ग्रथों में मास भक्षण के सन्दर्भ खोजने और उससे भारतीयों को बर्बर सिद्ध करने में लगा। अनेक वैदिक ग्रंथों का अनुवाद' यही सिद्ध करने के लिए किया गया कि हिंदू लोग गोमास खाते-खिलाते थे, यज्ञ में गोमांस की आहुति दी जाती थी। स्वातन्त्र्योत्तर काल में भी दुर्भाग्यवश उन पुस्तकों पर रोक नहीं लगाई गई अपितु धर्मशास्त्रों के गलत अर्थ करके उनमें गोमांस भक्षण सिद्ध करनेवाले लेखक डॉ० पाण्डुरग वामन काणे (1880-1972) को 'भारत रत्न' दिया गया। सभी कम्युनिष्ट इतिहासकार हिंदुओं द्वारा मास और गोमांस भक्षण का सिद्ध करने के लिए इसी पुस्तक का सन्दर्भ देते हैं। इसके बाद राहुल सांकृत्यायन (1893-1963) ने भी अपनी पुस्तक 'वोल्गा से गंगा' में राजा रन्तिदेव द्वारा मासभक्षण का उल्लेख किया, जिसके बाद इन सभी कुविचारों के खण्डन के लिए सन् 1970 में गीताप्रेस, गोरखपुर ने 'प्राचीन भारत में गोमास एक समीक्षा' नामक एक ग्रन्थ का प्रकाशन किया, जिसमें ब्रिटिश और वामपंथी इतिहासकारों के कुप्रचार का शास्त्रशुद्ध और जबर्दस्त खण्डन किया गया है इसी पुस्तक का द्वितीय संस्करण योजना ने इसी नाम से सन् 2011 में प्रकाशित किया है। इस पुस्तक के अध्ययन के बाद गोमांस-भक्षण-संबंधी सभी शंकाओं का समाधान हो जाएगा और यह विश्वास दृढ़ होगा कि वैदिक काल में गोहत्या और गोमास भक्षण प्रचलित था यह बात सर्वथा मिथ्या है और भारत की निधि वेद को भारतीयों की दृष्टि से गिराने के लिए ही विदेशियों ने तथा उनका पदानुकरण करके कुछ भारतीयों ने भी ऐसा किया है

पृष्ठ आकार	8.5" x 5.5"
सस्करण	द्वितीय 2011
कुल पृष्ठ	xxvii + 235

भारत का आधुनिक इतिहास-लेखन : एक प्रवञ्चना

रघुनन्दन प्रसाद शर्मा

प्राक्कथन : डॉ० कृष्ण वल्लभ पालीवाल

यह एक निर्विवाद सत्य है कि अंग्रेजी शासनकाल में पाश्चात्य और अनेक भारतीय इतिहासकारों ने भारत के इतिहास का विकृत किया है। ऐसी विकृतियों की सूची बहुत लम्बी है किन्तु इनमें उल्लेखनीय हैं आर्य-आक्रमण सिद्धान्त, वेदकाल 1500-1200 ई०पू०, रामायण, महाभारत, पुराणादि ग्रन्थ मिथक भारत में ऐतिहासिक सामग्री का अभाव, भारत की ऐतिहासिक घटनाओं और महापुरुषों की तिथियों में हेर-फेर इत्यादि। इस बृहत् ग्रन्थ में ऐसी अनेक विकृतियों पर प्रकाश डालते हुए भारतीय सन्दर्भों से उनका समाधान प्रस्तुत किया गया है

पृष्ठ आकार	:	8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, कलियुगाब्द 5114 (2003 ई०)
कुल पृष्ठ	:	xxxiv + 443

Distortion of Indian History

by Raghunandan Prasad Sharma

Forwarded by Thakur Ram Singh

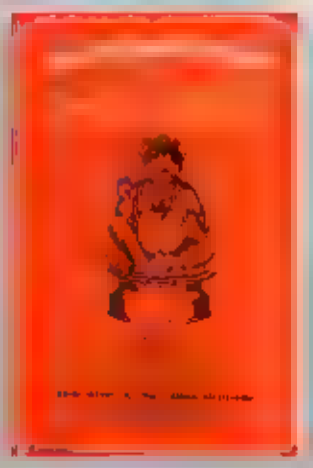

History occurs, not directed which is done by western historians in Indian history. Why, who, where has history was distorted. The distortion of culture implanted by conspiracy is current model of history. The small range of thought & limited scope of research by western scholars mould the history of India according to them. An attack on the manipulation of chronology & date of historic events in done by writer with genuine proofs.

Size	:	8.5" x 5.5"
Edition	:	Kaliyugābda 5105 (2004 C.E.)
No. of pages	:	vii + 143 pp

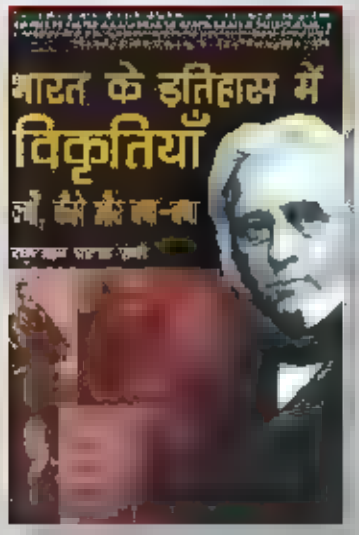

द्वितीय संशोधित संस्करण

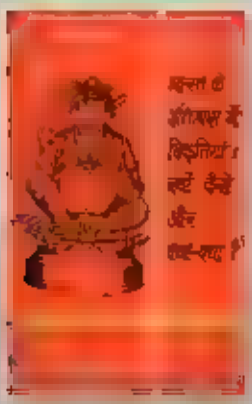

प्रथम संस्करण

भारत के इतिहास में विकृतियाँ
क्यों, कैसे और क्या क्या

लेखक : रघुनन्दन प्रसाद शर्मा

द्वितीय संस्करण की भूमिका : मा० बालमुकुन्द पाण्डेय

यह पुस्तक लेखक की एक अन्य पुस्तक 'भारत का आधुनिक इतिहास लेखन - एक प्रवञ्चना' का संक्षिप्त संस्करण है। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण सन् 2003 में प्रकाशित किया गया था, इस द्वितीय सस्करण में आवश्यक संशोधन परिवर्धनकर इसे नवीन कलेवर में प्रस्तुत किया गया है

पृष्ठ आकार		8.5" x 5.5"
संस्करण	:	द्वितीय, कलियुगाब्द 5115 (2013 ई०)
कुल पृष्ठ	:	jx + 162
आई०एस०बी०एन०	:	978-93-82424-06-2

"When the walls of the mighty fortress of Brahmanism are encircled, undermined, and finally stormed by the soldiers of the cross, the victory of Christianity must be signal and complete."

Monier Monier-Williams (1819-1899)
in *'Modern India and the Indians'*. 5th edition, 1891, p 262

लोकायतनम्

सपादक : प्रो० ठाकुर प्रसाद वर्मा

सहायक संपादक : डॉ० राजेश कुमार सिंह

इस ग्रन्थ मे अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के अष्टम राष्ट्रीय अधिवेशन (30 अक्टूबर 1 नवम्बर 2009, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर) में भारतीय कला, लोक-परम्परा एवं संस्कृति पर पठित 153 शोध-निबन्धों का संग्रह है

पृष्ठ-आकार	:	8.75" x 11½"
संस्करण	:	प्रथम, 2012
कुल पृष्ठ	:	ix + 817
आई०एस०बी०एन०		978-81-907895-7-8

विभूतिम्

संपादक : प्रो० ठाकुर प्रसाद वर्मा एवं अन्य

इस ग्रन्थ में भारतीय इतिहास संकलन समिति (काशी प्रान्त) महारानी बनारस महिला महाविद्यालय (रामनगर, वाराणसी) एव महाराज बलवन्त सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय के सयुक्त तत्त्वावधान में 'पुराण एव सस्कृति के मूल तत्त्व' विषय पर आयोजित एक-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (दिनांक 19 फरवरी, 2012, महारानी बनारस महिला महाविद्यालय, रामनगर, वाराणसी) में पठित 90 शोध निबन्धों का संग्रह है।

पृष्ठ-आकार	:	8.75" x 11½"
संस्करण	:	प्रथम, 2012
कुल पृष्ठ	:	xviii + 349
आई०एस०बी०एन०	:	978-81-907895-7-8

राजा भोज

सपादकद्वय : डॉ० आनन्द मिश्र, डॉ० हर्षवर्धन सिंह तोमर

इस ग्रन्थ में अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना की मालवा प्रान्तीय भारतीय इतिहास संकलन समिति द्वारा उज्जयिनी-नरेश राजा भोजराज के व्यक्तित्व और कृतित्व पर उज्जैन में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में पठित 33 शोध निबन्धों का संग्रह है।

पृष्ठ आकार		8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, कलियुगाब्द 5116 (2014 ई०)
कुल पृष्ठ	:	166
आई०एस०बी०एन०	:	978-93-82424-04-8

1857 का महासमर : भू सांस्कृतिक क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में

संपादक : डॉ० राजेन्द्र सिह कुशवाहा

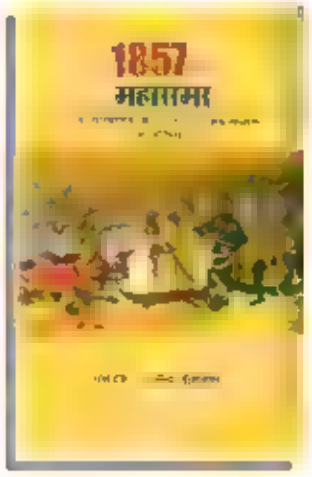

इस ग्रन्थ में अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के सप्तम राष्ट्रीय अधिवेशन (दिनाक 17-19 नवम्बर, 2009, कुरुक्षेत्र) में 1857 के स्वातन्त्र्य महासमर में प्रान्तसह योगदान' विषय पर पठित शोध-निबन्धों का संग्रह है। इसके अतिरिक्त इसमें देश के ख्यातिलब्ध इतिहासकारों के 1857 के युद्ध से सन्दर्भित कुछ महत्त्वपूर्ण लेखों को भी सम्मिलित किया गया है। 1857 के महासमर पर भारत के विभिन्न प्रान्तों के योगदान की दृष्टि से यह ग्रन्थ एक विश्वकोश के सदृश है।

पृष्ठ-आकार	:	9.5" x 6"
संस्करण	:	प्रथम, कलियुगाब्द 5111 (2009 ई०)
कुल पृष्ठ	:	584

भारतीय ज्ञान परम्परा : अग्निपुराण

सपादक : डॉ० सन्तोष कुमार शुक्ल

सहायक संपादक : डॉ० रत्नेश कुमार त्रिपाठी

पुरोवाक् : श्री बालमुकुन्द पाण्डेय

भारतीय वाङ्मय में पुराण वाङ्मय का एक विशेष स्थान है। वेदों के पश्चात् 'पुराण इतिहास' को पञ्चमवेद माना गया है। पुराण वाङ्मय भारतीय समाज के धार्मिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक वैयक्तिक, सामाजिक, राजनीतिक, सास्कृतिक आदि का लोकसम्मत विश्वकोश ही है अग्निपुराण में सभी शास्त्रों का विवेचन प्राप्त होता है इसीलिए प्रस्तुत ग्रन्थ में अग्निपुराण प्रतिपादित विभिन्न शास्त्रों को आधार बनाकर लिखे गए 28 शोध-पत्रों का प्रकाशन किया गया है।

इस ग्रन्थ का प्रकाशन माधव संस्कृति न्यास द्वारा संचालित 'भारतीय पुराण अध्ययन सस्थान' (Indian Institute for Purāṇa Studies) के सहयोग से अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना ने किया है।

पृष्ठ आकार		8.5" x 5.5"
संस्करण	:	प्रथम, कलियुगाब्द 5115 (2013 ई०)
कुल पृष्ठ	:	xi + 309
आई०एस०बी०एन०	:	978-3-82424-08-6

इतिहास दर्पण (अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका)

संपादक : डॉ० ठाकुर प्रसाद वर्मा

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना का यह मूलमंत्र रहा है कि भारत का इतिहास लेखन भारतीय दृष्टिकोण से हो इसके लिए यह आवश्यक है कि भारतीय इतिहास, पुरातत्त्व तथा इतिहास से संबंधित अन्य विषयों यथा भूगोल धर्म और दर्शन समाजशास्त्र साहित्य एवं भाषाविज्ञान अर्थशास्त्र विज्ञान आदि में ऐतिहासिक दृष्टिकोण से हो रहे शोधों तथा अनुसंधानों का ज्ञान व परिचय इतिहास के क्षेत्र और इतिहास में रुचि रखनेवाले बुद्धिजीवियों को हो सके। राष्ट्रीय दृष्टिकोण के प्राच्यविदों के साथ यह समस्या रही है कि उनके शोध पत्रों का प्रकाशन इतिहास की शोध पत्रिकाओं में नहीं हो पाता। इस प्रकार राष्ट्रीय दृष्टि से लिखे जा रहे भारतीय इतिहास के विषय में अन्य इतिहासकारों का न तो परिचय प्राप्त हो पाता है और न उनके व्यक्तिगत तौर पर प्रकाशित शोध पत्रों का उनके कॅरियर और इतिहास के क्षेत्र को लाभ मिल पाता है। उक्त आवश्यकता की पूर्ति के लिए अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना 'इतिहास दर्पण' नामक एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर की अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका सन् 1994 से नियमित प्रकाशित कर रही है। आज 'इतिहास दर्पण' इतिहास जगत् में एक ऐसा स्थान बना चुका है जो न केवल अपने देश में अपितु विदेशों में भी शोध प्रबन्धों तथा हमारे पक्ष अथवा विपक्ष में लिखी जा रही स्तरीय पुस्तकों में इसे उद्धृत किया जा रहा है। इतिहास के सुधी पाठकों के सहयोग तथा राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के इतिहासकारों के योगदान के फलस्वरूप 'इतिहास दर्पण' ने अपना अंतर्राष्ट्रीय स्थान बना लिया है

'इतिहास दर्पण' एक पूर्णरूपेण शोध पत्रिका है यह भारतीय इतिहास के क्षेत्र में हो रहे नवीनतम शोधों को प्रतिबिम्बित करती है साथ ही भारतीय इतिहास के विकृतिकरण का निराकरण भी करती है। सत्य निष्पक्ष तथ्यों पर आधारित, पूर्वाग्रहरहित आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों और नवीनतम पुरातात्त्विक खोजों के आधार पर लिखे गए शोध पत्रों का प्रकाशन करती है साथ ही इतिहास के क्षेत्र में कार्य करनेवाले विद्वान् इतिहासकार एवं शोधार्थियों से उनके मौलिक शोधपत्रों के प्रकाशन हेतु सहयोग की भी अपेक्षा रखती है

'इतिहास दर्पण' की केवल आजीवन सदस्यता का ही प्रावधान है। व्यक्तिगत 2,000 एवं संस्थागत 3,000 नकद, चेक या ड्राफ्ट स्वीकार्य है। ऑनलाइन सदस्यता की सुविधा भी है।

आई०एस०एस०एन०	:	0974-8065
भाषा		हिंदी संस्कृत एवं अंग्रेजी
पृष्ठ-आकार		8.75" x 11½"
कुल पृष्ठ	:	160-200
प्रकाशन-तिथि		वर्ष प्रतिपदा एवं विजयदशमी

॥ यथार्थं लिख्यते किञ्चित् ॥

इतिहास दर्पण

ITIHAS DARPAN

ISSN 0974-3065

(अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना की अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका)

नियमित रूप से भेजें

मेरी प्रति कुरियर ☐ रजिस्टर्ड डाक ☐ द्वारा इस पते पर प्रेषित की जाए–

नाम : ....

जन्मतिथि : ....

पद/व्यवसाय : ....

पता : ....

....

.... पिन ☐☐☐☐☐☐

दूरभाष/मोबाइल : ....

ई-मेल : ....

आजीवन सदस्यता (15 वर्ष) व्यक्तिगत ₹ 2,000 ☐ संस्थागत ₹ 3,000 ☐

संलग्न मनिऑर्डर ☐ चेक ☐ डिमाण्ड ड्राफ्ट ☐

चेक/ड्राफ्ट क्रमांक ...., बैंक का नाम..............................

चेक/ड्राफ्ट **'इतिहास दर्पण' ('Itihas Darpan')** के नाम से निम्नलिखित पते पर भेजें

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना

बाबा साहेब आपटे स्मृति भवन, 'केशव-कुञ्ज',

देशबन्धु गुप्त मार्ग, झण्डेवालान, नयी दिल्ली-110 055

दिनांक : ....

हस्ताक्षर (सदस्य)..............................

॥ नामूलं लिख्यते किञ्चित् ॥

इतिहास दर्पण

ITIHAS DARPAN

ISSN 0974-3065

(Biannual Research Journal of Akhila Bharatiya Itihasa Sankalana Yojana)

Please send my copy through

COURIER ☐ REGISTERED BOOK POST ☐ on this address :

Name ....

Date of Birth ....

Designation ....

Address ....

....

.... PIN ☐☐☐☐☐☐

Tel./Mob No ....

e-mail : ....

Life Membership (15 Years) Personal ₹ 2,000 ☐ Institutional ₹ 3,000 ☐

Payment : Money order ☐ Cheque ☐ D.D ☐

Cheque/D D. No. : .... Bank ....

Cheque/D D in favur of 'इतिहास दर्पण' (**'Itihas Darpan'**) send to the following address

Akhil Bhartiya Itihas Sankalan Yojana

Baba Sahib Apte Smriti Bhawan, 'Keshav Kunj'

Desh Bandhu Gupta Marg, Jhandewalan, New Delhi-110 055

Date :..

Member's Signature.................................

आदेश-प्रपत्र

पुस्तकें मँगवाने के लिए कृपया इस आदेश-प्रपत्र का उपयोग करें

■ अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के प्रकाशन .

क्रम	शीर्षक	लेखक	प्रकाशन-वर्ष	सहयोग राशि	प्रति
	विश्व की कालयात्रा कालपुरुष इतिहासपुरुष	डॉ० वासुदेव पोद्दार	2000	300 हार्ड	
2	सृष्टि का इतिहास	डॉ० दामोदर झा	2006	120 हार्ड	
3.	आर्यवर्त का प्राचीन इतिहास	सं० डॉ० रविप्रकाश आर्य	2004	500 हार्ड	
4	भारतीय कालगणना का वैज्ञानिक एवं वैश्विक स्वरूप	डॉ० रविप्रकाश आर्य	.997	30	
५	भारतीय इतिहासशास्त्र एवं कालक्रम	डॉ० वासुदेव पोद्दार	2000	10	
6.	१2वीं शताब्दी में प्रवेश	डॉ० रविप्रकाश आर्य	...	5	
7.	वैदिक सरस्वती नदी शोध अभियान	श्रीराम साठे	20.0	60	
8.	मनु का दण्ड विधान	डॉ० हर्षवर्धन सिंह तोमर	2014	700/300	
9.	महाभारत युद्ध . कालनिर्णय समस्या	श्रीराम साठे	20 0	80	
10.	कृण्वन्तो विश्वमार्यम्	डॉ० शरद हेबाळकर	2010	300	
.	अविस्मरणीय विजयनगर साम्राज्य एवं महाराजा कृष्णदेवराय	डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल	2009	50	
.2	राष्ट्रीय चैतन्य के प्रकाश में भारत में राष्ट्रीयता का स्वरूप : प्रारम्भ से मुस्लिम काल तक	डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल	20.3	400 हार्ड	
3	राष्ट्रीय चैतन्य के प्रकाश में भारत का स्वाधीनता संघर्ष	डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल	20 2	400 हार्ड	
4.	ब्रिटिश इतिहासकार तथा भारत	डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल	20 0	200	
5.	कांग्रेस अंग्रेज भक्ति से राजसत्ता तक	डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल	20 1	150 हार्ड	

16.	स्वामी विवेकानन्द की इतिहास दृष्टि	डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल	20 2		
17	विवेकानन्द सुकर्ण और इण्डोनेशियाई राष्ट्र निर्माण	डॉ० रामदेव भारद्वाज	20.3	50	
18.	हिंदुत्व से प्रेरित विदेशी महिलाएँ	डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल	20 4	100	
19	1857 का स्वातन्त्र्य समर एक पुनरावलोकन	डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल	2009	50	
20.	आर्य कौन थे ?	श्रीराम साठे	20.0	60	
2	प्राचीन भारत में मीमांसा : एक समीक्षा	सं० डॉ० ठाकुर प्रसाद वर्मा	20 1	230	
22.	भारत का आधुनिक इतिहास लेखन एक प्रवञ्चना	रघुनन्दन प्रसाद शर्मा	2003	25	
23	भारत का इतिहास में विकृतियाँ क्यों कैसे और क्या क्या	रघुनन्दन प्रसाद शर्मा	20 3	200 हार्ड	
24.	इतिहास दर्पण (शोध पत्रिका)	सं० डॉ० ठाकुर प्रसाद वर्मा		500	
25.	History of Creation	Dr Ravindra Nath	2000	75	
26.	Stepping n 52nd Century	Dr Ravi Prakash Arya	...	5	
27	Vedic Culture and its continuity	Dr Shivaji Singh	...	20	
28.	Discovery of source of Vedic Sarasvati	V M K Puri	2000	15	
29.	Kṛṇvanto Visvamāryam	Dr Sharad Hebalkar	...	*In Press*	
30.	The Problems in Indian Historiography	K V Ramakrishna Rao		15	
31	1857 The Vanavasi Leadership	Dr Satish Chandra Mittal	2010	100	
32.	Distortions in Indian History	Raghunandan Pd. Sharma	2003	125	
33.	लोकायतनम् (प्रोसीडिंग)	सं० डॉ० ठाकुर प्रसाद वर्मा	2012	300	
34.	विभूतिम्	सं० डॉ० ठाकुर प्रसाद वर्मा	2012	550	
35.	राजा भोज	सं० डॉ० आनन्द मिश्र	20.4	प्रेस में	
36.	1857 का महासमर पृ सांस्कृतिक क्षेत्र	डॉ० राजेन्द्र सिंह कुशवाहा	2009	400	
37	भारतीय ज्ञान परम्परा अग्निपुराण	सं० डॉ० सन्तोष कुमार शुक्ल	20 4	500 हार्ड	

भारतीय इतिहास संकलन समितियों के प्रकाशन

■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, मालवा प्रान्त**				
1	पुराणान्तर्गत इतिहास पौराणिक मालवा एवं संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य (प्रोसीडिंग)	डॉ० रमण सोलंकी एवं अन्य	20 1	150 हार्ड	
■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, हरियाणा प्रान्त**				
.	भारतीय इतिहास की आत्मा वेदान्त	डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा	20.0	.25	
2.	कपिस्थल (युगयुगीन कैथल)	कमलेश शर्मा	2012	20	
3.	पुराणों में इतिहास (संकलित)	,,,	2012	60	
4.	1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में हरियाणा का योगदान	,,,,	,,,	35	
■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, जम्मू एवं काश्मीर प्रान्त**				
1.	India s Western Lands	Dr Sukhdev Singh Charak	2000	250	
■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, पंजाब प्रान्त**				
1.	भारत के वीर पुरुष महाराणा प्रताप	सुशील कुमार शर्मा	1998	10	
2.	1857 के महासंघर्ष में क्या पंजाब अंग्रेजों के प्रति वफादार रहा ?	डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल	2007	20	
3.	युगयुगीन जालन्धर	राजेन्द्र सिंह पराशर	2012	100	
4.	पौराणिक इतिहास विमर्श (प्रोसीडिंग)	सं० डॉ० नरसिंह चरण पण्डा	20.2	.60	
■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, असम प्रान्त .**				
..	Prāgjyotiṣapura Through Ages (Proceeding)	..	1996	60 HB	
■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, चित्तौड़ प्रान्त (उदयपुर)**				
1	मेदपाट का पुरातात्त्विक इतिहास	डॉ० ललित पाण्डेय	,,,	20	
2	भारतीय इतिहास के जैन स्रोत प्रोसीडिंग	सं० डॉ० महावीर प्रसाद जैन	20 2	500 हार्ड	
3.	Glonous History of Mewar	Om Prakash	,,,	15	
■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, कोंकण प्रान्त**				
1.	Rāmāyaṇa Around the World	Ravi Kumar	2008	100	
2.	1857 वनवासी नेतृत्व	डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल	2009	00	
■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, आन्ध्रप्रदेश प्रान्त (हैदराबाद)**				
,	History of Hyderabad District, 1879-1950	Ed M R. Sarma	1987		

2.	Dates of the Buddha	Shri Ram Sathe	1987	75 HB	
3.	Bharatiya Historiography	Sri Ram Sathe	1987		
4.	आधुनिक भारतीय इतिहास की प्रमुख भ्रान्तियाँ	डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल	2006	60	
■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, उत्तर बिहार प्रान्त .**				
1	आर्य आक्रमणकारी या मूल निवासी ?	डॉ० शैलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	994	8	
■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, महाराष्ट्र प्रान्त .**				
1.	The Aryan Problems (Proceeding)	Ed S B Deo	1993		
2.	गणपट्टकृत समयनय संस्कृत मराठी)	प्रो० प्रभाकर ग० जोशी	2000	60	
3	Vishnu Sridhar Wakankar (English	VN Mishra	2001	15	
■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, पुणे**				
1.	पुणे इतिहास दर्शन (मराठी)	++	.993	++	
■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, उत्तरप्रदेश प्रान्त :**				
..	Varanasi through the Ages	Ed Dr T P Verma	1986		
2.	युगयुगीन सरयूपार - गोरखपुर परिक्षेत्र का इतिहास	सं० डॉ० ठाकुर प्रसाद वर्मा	987		
3.	श्रीराम और उनका युग	डॉ० ठाकुर प्रसाद वर्मा	1993	25	
4	उत्तरांचल हिमालय समाज संस्कृति इतिहास एवं पुरातत्त्व	स० घनानन्द पाण्डेय एव अन्य	.994	..	
5.	युगयुगीन ब्रज	सं० डॉ० ठाकुर प्रसाद वर्मा	1998	..	
■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, काशी प्रान्त .**				
1.	भारतीय प्रतिरोध का इतिहास	डॉ० अशोक कुमार सिंह	.		
2	स्वामी विवेकानन्द देशभक्त संन्यासी एव समाज उन्नायक	डॉ० शैलेन्द्र प्रसाद पाथरी	.999		
3	ऋग्वैदिक आर्य और सरस्वती सिधु सभ्यता	डॉ० शिवाजी सिंह	2004	50	
4.	काशी गौरव ग्रन्थमाला (3 भाग)	सं० डॉ० देवी प्रसाद सिंह	2006	1200 (सेट)	
■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, कर्नाटक प्रान्त (मैसूर) .**				
1.	Aryans Who Were They ?	Shri Ram Sathe	1991		
2.	A quest after the Lost Vedic Sarasvati River	Lipikar L S. Wakankar	1994	40	
3.	Historiography of Indian Arts (music and Dance) Insights	R Sathyanarayana	1997		
4.	Dating in the Indian Archæology	Dr T P Verma	1998	150	

■	**भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रान्त :**				
1.	भारतीय इतिहास-लेखन : चुनौतियाँ एवं नये आयाम	डॉ० शिवाजी सिंह	2007	...	
2.	माधवराव सदाशिवराव गोळवळकर	डॉ० सदानन्द गुप्त	2009	...	
3.	Role of Cultural & Religious Indologies in History Writing	Dr. Makkhan Lal	2009	...	
4.	पुराणांतर्गत इतिहास (प्रोसीडिंग)	सं० डॉ० प्रदीप कुमार राव	2010	20	
5.	नाथ पंथ और भक्ति-आंदोलन (प्रोसीडिंग)	सं० डॉ० प्रदीप कुमार राव	2011	595 (हार्ड)	
6.	सरयू घाटी की सभ्यता (प्रागैतिहासिक पृष्ठभूमि)	डॉ० कुँवर बहादुर कौशिक	2012	50	
7.	पुराण और इतिहास	सं० डॉ० प्रदीप कुमार राव	2012	50	
8.	सरयू घाटी की धानप्रधान सभ्यता	डॉ० कुँवर बहादुर कौशिक	2013	50	
■	**भारतीय इतिहास संकलन योजना समिति, दिल्ली प्रान्त :**				
1.	वैवस्वत मन्वन्तर में मानव-सृष्टि तथा समाज-संरचना (प्रोसीडिंग)	सं० विद्याचन्द ठाकुर	2007	500	
2.	दिल्ली के मन्दिर	डॉ० रा० श० राघव, डॉ० रत्नेश	2010	100	
■	**उपाकान्त केशव (बाबा साहेब) आपटे स्मारक समिति, बेंगलूरु :**				
1.	Sarasvati (7 Vols.)	Dr. S. Kalyanraman	2003	3500 (set)	
2.	Once upon a time : Hindu history of Muslim Middle East	Sudhakar Raje	2004	100	
3.	पुण्यसलिला सरस्वती नदी	देवेन्द्र सिंह चौहान	2004	40	
4.	The Science of Manvantaras	Dr. Thakur Prasad Verma	2006	70	
5.	Bhārata Jīvana Taraṅgini	Sri Krishna Murthi R.	2008	250	
6.	सरस्वती नदी शोध आणि बोध (मराठी)	प्रो० (डॉ०) आनन्द दामले	2012	...	
7.	सरस्वती की कहानी	श्रीमाली एवं श्रीमाली	2013	...	
8.	सरस्वती नदी शोधाभियानम् (संस्कृत)	प्राण पटवारी	2013	...	
9.	River Sarasvati : Search and Enlightenment	Prof. (Dr.) Anand Damle	2013	...	
10.	भारत जीवन तरंगिणी : इतिहास-परम्परा की नदी	श्रीकृष्णमूर्ति आर०	2014	300	
11.	भारत जीवन तरंगिणी (चार्ट) (अंग्रेजी, कन्नड़, हिंदी)	...	...	...	

कृपया आदेश-प्रपत्र में प्रतियों की संख्या अंकित करने के पश्चात् अपना निम्नलिखित विवरण सुपाठ्य अक्षरों में दें–

सेवा में,

प्रकाशन-विभाग
अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना
नयी दिल्ली-110 055

महोदय, आपके आदेश-प्रपत्र में चिह्नांकित पुस्तकें कृपया मुझे निम्नलिखित पते पर वी०पी०पी०/ट्रांसपोर्ट/रेल द्वारा भेजें :

नाम (व्यक्ति/संस्था).....

पता.....

.....

.....राज्य.....

.....पिन

दूरभाष.....

मोबाइल.....

ई-मेल.....

ट्रांसपोर्ट.....

भुगतान का प्रकार (चेक/ड्राफ्ट/मनिऑर्डर).....

चेक/ड्राफ्ट 'अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना' के नाम से बनेगा।

डाक से आदेश करने के लिए कृपया आदेश-प्रपत्र को काटकर निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें–
अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना
बाबा साहेब आपटे स्मृति भवन, 'केशव-कुञ्ज', देशबन्धु गुप्त मार्ग,
झण्डेवालान, नयी दिल्ली-110 055

ई-मेल से आदेश करने के लिए कृपया इस प्रपत्र को निम्नलिखित ई-मेल-पते पर प्रेषित करें–
abisy84@gmail.com

दूरभाष से आदेश करने के लिए कृपया निम्नलिखित नम्बर पर सम्पर्क करें–
011-23675667

आदेश दिनांक.....

हस्ताक्षर आदेशकर्ता

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना
केशव कुंज, झण्डेवाला

प्रकाशन सिर्फ़ व्यवसाय नहीं, अपितु
देश के सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक
विकास में भागीदारी भी है

प्रकाशन-विभाग

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना

बाबा साहेब आपटे स्मृति भवन, 'केशव-कुञ्ज',
देशबन्धु गुप्त मार्ग, झण्डेवालान, नयी दिल्ली-110 055

Publications Department

Akhila Bhāratīya Itihāsa Saṅkalana Yojanā

Baba Sahib Apte Smriti Bhawan, 'Keshav Kunj',
Deshbandhu Gupt Mag, Jhandewalan, New Dehi-110 055
Tel.: 011-23675667
e-mail: abisy84@gmail.com
Visit us at: www.itihassankalan.org

www.facebook.com/akhilabharatiyaitihasasankalanayojana
www.facebook.com/itihasdarpan